India Media Monitor

Prabhat Khabor

My life

Date: 01/08/2013 | Edition: Kolkata | Page: 1 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 34 H: 13

Clip: 1 of 1

मेरा जीवन

जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये

अगर आपका भारतीय जीवन मूल्यों में विश्वास है, जीवन की धुरी, परिवार, समाज और धर्म में आस्था है, जो मिला है उसे ईश्वर की कृपा मानते हुए जीवन के उतार-चढ़ाव के समय मुस्कुराना सीख लिया है, तो समझिये आपने जीना सीख लिया. समयानुकूल अपने व्यावसायिक उत्पादों की गुणवत्ता, विज्ञापन व विपणन की नीतियों को सही दिशा और गति देने में सफल हैं, तो आप असफल नहीं हो सकते. सफल बनने के लिए विफल लोगों के जीवन को पढ़ें -समझें तो निश्चित सफलता मिलेगी. यह कहना है देश के अग्रणी व्यावसायिक प्रतिष्ठान इमामी लिमिटेड के संयुक्त चेयरमैन व कवि राधेश्याम अग्रवाल का. पेश है उनसे पुरुषोत्तम तिवारी की बातचीत के प्रमुख अंश.....

एक नजर में राधेश्याम अग्रवाल

■ शिक्षा: इलएलबी, एलएलएम, एफसीए, एफसीएस ■ इमामी लि. संस्थापक अध्यक्ष व संयुक्त चेयरमैन ■ अभिन्न मित्र राधेश्याम गोयनका के साथ मिलकर इमामी को नयी पहचान दिलायी ■ समाज व राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानकर बदलते जीवन मूल्यों का आकलन करते हुए जीवन निर्वाह ■ व्यावसायिक नीतियों के उद्घोषक ■ सत्संग के प्रति झुकाव ■ विभिन्न सेवामयी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से संबद्ध ■ कई ट्रस्टों के मानद ट्रस्टी ■ दुर्लभ पेंटिंग्स व मूर्तियों के संग्रहकर्ता ■ प्रथम काव्य संग्रह: मातृधारा

प्रेम-भाव में जीना/ न चिड़चिड़ाना/ न किस्मत को टोकते रहना / हर दिन / हर पल / ईश्वर का बनाया / ईश्वर का दिया / दान समझना / और क्या! अपने भावधारा काव्य संग्रह की इन पंक्तियों को गुनगुनाते हुए इमामी लि. के संयुक्त चेयरमैन राधेश्याम अग्रवाल कहते हैं - 'यही तो जीवन है.' यह जो जीवन ईश्वर कृपा से मिला है, उसे सफल बनाने के लिए जरूरी है परिवार, स्वास्थ्य, धन, समाज व अध्यात्म के बीच समन्वय. परिवार में पत्नी का समर्थन किया और मां बाप को उपेक्षित किया, तो पारिवारिक जीवन बिगड़ जायेगा.

गोल मिले, बनाये मास्टरमाइंड

जीवन में क्या करना है इसका गोल (लक्ष्य) स्पष्ट होना चाहिए, निश्चित लक्ष्य आपको निश्चित दिशा देता है. गोल मिलने पर मास्टरमाइंड बनाये, इसके लिए जरूरी है - आइडिएशन, एक्टिवेशन, इमप्लीमेंटेशन और मॉनिटरिंग. किसी व्यक्ति में ये चार बातें हों, तो उसे लगेगा कि दुनिया में किसी चीज की कमी नहीं है. समृद्धि व प्रसिद्धि दोनों आपके पास होगी. मैंने इन बातों को अपनाया है, जिसने मुझे सफल बनाया है. जिस आदमी का विचार स्पष्ट होता है, वह भीतर से भी स्पष्ट होता है. ऐसे आदमी का छोटा-सा प्रयास भी व्यर्थ नहीं जाता.

सबसे बड़ा मालिक है ईश्वर

जग में ईश्वर सबसे बड़ा मालिक है. उसका खजाना हम सबके सामने है, पर उसकी कृपा के बिना उसे कोई ले नहीं सकता. क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा. प्रकृति के इन पांच तत्वों में अकूत संपदा भरी है. इन तत्वों को अशांत किये बिना रहना ही जीवन है. इसमें अपार शक्ति है. हमारी आंखों में इतनी शक्ति नहीं कि प्रकृति की इस अपार शक्ति और अकूत खजाने को देख सकें. हम एक हीरे के टुकड़े को पाकर पागल हो जाते हैं. परंतु आकाश के तारों में अनगिनत हीरे के टुकड़े बिखरे पड़े हैं.

लड़की-लक्ष्मी के पीछे मत पड़ो

जो असली जीवन मूल्य है, उसे लोग भूल रहे हैं. अपनी संस्कृति व जीवन की कला को लोग भूल रहे हैं. सुख साधनों की खोज में जुटे हैं और उसके उपभोग की खोज में इतने रम गये हैं, कि अब सुख हमारे पास आने से डरने लगा है. लोग समझने लगे हैं कि जिनके पास पैसा नहीं है, उसका जीवन बेकार है. सच्चा सुख पाना है, तो लड़की-लक्ष्मी (भोग) के पीछे मत पड़ो. जितना इसके पीछे पड़ोगे, उतनी दूर चली जायेगी. वह कभी नहीं मिलेगी. भगवान बिना भगवती के नहीं आते.

जीवन में जो कुछ भी ईश्वर ने मुझे दिया है, उसमें पत्नी उषा व मित्र राधेश्याम गोयनका की बड़ी भूमिका है. इन दोनों के बिना मेरा जीवन, जीवन नहीं है. उषा मेरे अंतरतम में झांककर देखती है, समझती है. धरती से बंधी नदी की भांति मुझसे बंधी रहती है. धर्मभीरु उषा बच्चों व सबको फूलों-से मुस्काते हुए देखना चाहती है. परम मित्र राधेश्याम से मेरी 60 वर्षीय मैत्री है. इमामी की कहानी मेरे मित्र के बिना कहीं नहीं जा सकती. क्या देखना है-क्या नहीं, किसे जानना है-किसे नहीं, क्या मानना है-क्या नहीं, क्या लेना है- क्या छोड़ना है, जब हम साथ रहते हैं, तो यही विवेक रखते हैं. यही हमारी जागृति है. चूंकि हम दोनों एक हैं, दो नहीं. द्वैत नहीं अद्वैत हैं. ईशकृपा से स्वामी राघवेश्वर भारती सद्गुरु रूप में मुझे मिले हैं. विषम परिस्थितियों में गुरु जी का मार्गदर्शन मुझे कमजोर नहीं होने देता. किसी भी व्यक्ति के सफल जीवन के लिए पत्नी, मित्र का सहयोग व गुरु का आशीर्वाद जरूरी है.

अगर सफल व्यवसायी होना है तो संत बनना पड़ेगा. संत का एक मतलब है शांत रहना. अशांत व्यवसायी समाज के लिए अशांति तो पैदा करेगा ही. शांत रहने पर विवेक साथ रहता है. व्यवसाय किस चीज का करना है और कैसे सफल होना है शांत रहने पर ही सहज रास्ता मिल जाता है. संत हमेशा मीठी वाणी बोलते हैं. मीठी वाणी बोलना भी एक सेवा है. मीठी वाणी से व्यवसाय में सफलता मिलती है.

आमरी कांड, विधि का विधान

आमरी कांड को मैं विधि का विधान मानता हूं. इससे मेरे जीवन में खास परिवर्तन नहीं आया है. मैं पहले जैसा सीताराम-सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये... सीताराम कहिये, गुनगुनाता रहता हूं. यूं मुझे ऊर्जा व दिशा मिलती है. राज्य की राजनीतिक परिस्थिति 1970 के दशक में तेजी से बदल रही थी. तब उद्योगपतियों व व्यवसायियों को खूब डराया-धमकाया जाता था. बड़े उद्यमी राज्य छोड़ने लगे थे. ऐसे में स्थानीय दबंगों का संरक्षण लेना हम जैसों की मजबूरी थी. यह वह समय था जब इमामी अपने शुरुआती दौर से गुजर रहा था.